9

आपका विवाह सफल हो सकता है ...

धन की समस्या को हल करने से

जब आपका विवाह होता है, आपका और आपकी पत्नी का कभी-कभार धन के लिए विवाद हो जाता है। बाइबल के एक कथन[1] को अपनाते हुए हमें इस बात को नोट करना होगा कि घर में धन ही हर झगड़े की जड़ है।[2] इसके निम्न कुछ उदाहरण है:

(1) कोई दम्पत्ति अधिक धन नहीं कमा पाता, जिस कारण वे दुखी हैं क्योंकि वे बहुत निर्धन हैं, पति को दो या उससे अधिक जगह पर नौकरी करनी पड़ती है ताकि वे अच्छा जीवन व्यतीत कर सकें। इस कारण पति के पास पत्नी के लिए समय ही नहीं होता।

(2) एक दम्पत्ति अधिक खर्च कर देता हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे कर्ज़ में डूब जाते हैं और अपने बिल नहीं चुका पाते। वे एक-दूसरे पर फिजूल खरीदारी करने का आरोप लगा सकते हैं। पत्नी हैरानी से चीखकर कहेगी कि मैंने ऐसे पुरुष से विवाह क्यों किया, जो परिवार का खर्च नहीं चला सकता। दोनों इसी फिक्र में कई रातें बिना सोए गुजार देते हैं और फिर उन्हें अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से मदद मांग कर शर्मिंदगी का सामना करना पड़ता है।

(3) एक दम्पत्ति देखने में खूब धनवान होगा, लेकिन सच्चाई में वे सांसारिक लालसाओं में ऐसे जकड़े हैं जिसका कोई अन्त नहीं। जितना वे कमाते हैं उनमें और कमाने की लालसा जागती है। खुशी उनके आस-पास ही है, लेकिन इतना पा लेने के बाद भी वे तृप्त नहीं होते। सांसारिक लालसाओं के कारण वे भूल गए हैं, जो विवाहित जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। जैसे-जैसे उनके पास सांसारिक वस्तुएं दोगुनी होती जाती हैं उनका आपसी प्रेम कम होता जाता है और अन्त में बिल्कुल समाप्त हो जाता है।

ये सब समस्याएं वैवाहिक रिश्ते पर असर डालती हैं। जितना कोई दम्पत्ति धन की समस्या के बारे में सोचेगा, उनके पास अपने सफल वैवाहिक जीवन के लिए समय और उत्साह कम होता जाएगा। धन के कारण एक-दूसरे से नाराज़गी उस प्रेम को खा जाएगी जो वैवाहिक जीवन को आपस में बांधे रखता है, बिल्कुल दीमक के उन कीड़ों की तरह जो घर की चौखट को धीरे-धीरे खा जाते हैं। अन्ततः उनमें कुछ नहीं बचता, सिवाय एक खोल के लेकिन अन्दर से खोखला होता है। धन की समस्या विवाह को नष्ट कर सकती है।

धन के लिए बाइबल की शिक्षा

धन की समस्या को बाइबल के नियमों द्वारा कैसे हल किया जा सकता है? बाइबल धन और विवाह के बारे में क्या सिखाती है?

मसीही लोग जीने के लिए काम करें (1 थिस्सलुनीकियों 4:11)

बाइबल मसीही लोगों को सिखाती है कि ''... अपने हाथों से काम करके'' अपनी जीविका

कमाएं (1 थिस्सलुनीकियों 4:11; देखें इफिसियों 4:28)। यदि कोई मनुष्य काम करना न चाहे तो खाना भी न पाए (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 3:10)। यदि कोई अपनों की ओर निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से फिर गया और अविश्वासी से भी बुरा बन गया (1 तीमुथियुस 5:8)। जीविका कमाने से मना करने वाले व्यक्ति को ताड़ना दी जानी और आवश्यक हो तो कलीसिया द्वारा अनुशासित किया जाना आवश्यक है (2 थिस्सलुनीकियों 3:6-15)। जो मसीही काम कर सकते हैं वे जान-बूझकर सरकार के खर्चे पर जीवन व्यतीत करना नहीं चाहेंगे और न ही किसी संस्था से मदद लेना चाहेंगे।[3]

मसीही लोग काम करते हैं ताकि दे सकें (इफिसियों 4:28)

बाइबल बताती है कि मसीही लोगों के काम करने का एक कारण यह भी है कि वे दूसरों की मदद कर सकें (इफिसियों 4:28)। लोगों को काम करना चाहिए ताकि वे अपनों और परिवार का पालन पोषण कर सकें, लेकिन उन्हें इसलिए भी काम करना चाहिए ताकि वे ज़रूरतमंदों की मदद कर सकें। शुरू से ही पति-पत्नी दोनों को काम जो भी उनके पास हो, उसमें से दिल खोलकर प्रभु की सेवा के लिए देना चाहिए।

धन कमाना मसीही लोगों का मुख्य उद्देश्य नहीं है (मत्ती 6:19क)

बाइबल सांसारिक वस्तुओं के विरुद्ध चेतावनी देती है और सिखाती है कि एक दम्पत्ति के जीवन का मुख्य लक्ष्य सिर्फ धन कमाना और बचाना ही नहीं होना चाहिए। यीशु ने कहा, ''अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा मत करो'' (मत्ती 6:19क)। उसने चेतावनी दी, ''लोभ से बचो।''[4] पौलुस ने लिखा, ''धन का प्रेम सब प्रकार की बुराइयों'' की जड़ है (1 तीमुथियुस 6:10) और मसीही लोगों को आग्रह करता है कि धन की लालसा न करो।[5] हमारे संसार में बहुत से लोग धन की दौड़ में शामिल हैं। मसीही लोगों को इस दौड़ में भाग लेने से इनकार करना होगा!

इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि यीशु चाहता है कि मसीही लोग गरीबी में रहें। एक मसीही दम्पत्ति घर ले सकता है, फर्नीचर ले सकता है, कपड़े खरीद सकता है। इसके साथ ही अपने बच्चों के भविष्य के लिए धन जमा कर सकता है। यदि आप अपनी बुलाहट के प्रति वफ़ादार रहना चाहते हैं तो सांसारिक वस्तुओं पर समझदारी से उचित खर्च करें।[6] आप धन को परमेश्वर का स्थान देने के लिए आजकल के लोगों की तरह धन की दौड़ में शामिल होना कभी कबूल नहीं कर सकते।

पहले अधिकतर मसीही गरीब हुआ करते थे, लेकिन उनमें से सभी नहीं होते थे।[7] जब पौलुस ने यह कहा कि वह नहीं चाहता कि मसीही लोग अमीर बनना चाहें क्योंकि ''... का प्रेम'' सब बुराइयों की जड़ है (1 तीमुथियुस 6:9, 10)। उसने अमीर को भी नसीहत दी। 1 तीमुथियुस 6:17-19 के अनुसार (1) वे अभिमानी न हो (RSV); (2) वे ''चंचल धन'' पर आशा न रखें; (3) परमेश्वर पर भरोसा रखें; (4) उन्हें पहचानना है कि सब कुछ परमेश्वर की ओर से मिलता है (5) भले कामों में धनी बनें और सहायता करने में तत्पर हों। इन नियमों का पालन करके वे आगे के लिए अच्छी नींव डालें और ''सत्य जीवन को वश में कर ले'' (RSV)।

मसीही लोग अपने धन के भण्डारी हैं (1 पतरस 4:10)

बाइबल सिखाती है कि मसीही लोग पृथ्वी पर अपनी सम्पत्ति के भण्डारी हैं (1 पतरस 4:10)। हर वस्तु जो अस्तित्व में है, सचमुच परमेश्वर की ही है।[8] आपके पास जो कुछ भी है, सब परमेश्वर का है, आपको तो कुछ समय के लिए ब्याज पर दिया गया है ताकि आप इन चीज़ों का इस्तेमाल परमेश्वर की महिमा के लिए कर सकें। आप जिन चीज़ों को अपना कहते हैं, परमेश्वर द्वारा आपको उन चीज़ों का भण्डारी ठहराया गया है और उनका इस्तेमाल आप कैसे कर सकते हैं, इसका आपको उसे हिसाब देना होगा।[9] इस कारण आप जो धन रविवार को परमेश्वर को ''परमेश्वर के धन'' के रूप में देते हैं सिर्फ वहीं आपके पास जितना भी धन है सब परमेश्वर का है। जब भी आप धन खर्च करने का कोई फैसला लेते हैं पहले यह सोच लें कि परमेश्वर आपसे उन आशिषों का इस्तेमाल कैसे करवाना चाहता है।

धन के इस्तेमाल के विषय में कुछ व्यावहारिक सुझाव

बाइबल के इन नियमों से कौन से व्यावहारिक सुझाव के लिए जा सकते हैं, जो नवविवाहितों के लिए मददगार साबित हों? आप और आपकी पत्नी धन के कारण होने वाले विवादों को कैसे टाल सकते हैं?

धन आपके काम पर हावी न हो

आप कितना धन कमा सकते हैं, यही आपका उद्देश्य नहीं होना चाहिए-शायद आपका मुख्य उद्देश्य भी नहीं-जब आप कोई नई नौकरी करें। यह अवश्य है कि आप उतना कमा पाएं ताकि आपके परिवार का निर्वाह हो सके (या वे बिना चिन्ता के आरामदायक जीवन जी सकें) फिर भी अपना काम सिर्फ इसलिए चुनना कि उससे आपको कितना मिलेगा, आपका सांसारिक व्यवहार दर्शाता है। आपको अपने आप से पूछना चाहिए, ''मैं अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल परमेश्वर की सेवा के लिए कैसे कर सकता हूं?'' और ''मेरे परिवार की आत्मिक भलाई के लिए क्या उचित है?''

फिजूलखर्ची न करें

आपको ध्यान रखना चाहिए कि आप फिजूलखर्ची न करें। बेसिल ओवरटन जो लम्बे समय तक ''द वर्ल्ड इवैंजलिस्ट'' के सम्पादक रहे, कहा करते थे, ''यदि आपका खर्च आपकी आय से अधिक बढ़ जाएगा तो आपकी दिखावे की चाह आपके पतन का कारण बन जाएगी।'' क्रेडिट कार्ड देने वाली कम्पनियां बहुत आसानी से आपको गहरे कर्ज में डुबो देती हैं, जिसका परिणाम आपके परिवार को भुगतना पड़ता है। इससे कलीसिया को भी नुकसान पहुंचता है क्योंकि जब कलीसिया के सदस्य बड़े कर्ज में डूबे हों तो वे उतना नहीं दे सकते, जितना उन्हें देना चाहिए।

जवान लोगों को कई बार समस्याओं का सामना करना पड़ता है क्योंकि उनकी अपेक्षाएं बहुत ऊंची होती हैं। उन्होंने कई साल पहले अपने माता-पिता के खर्च पर अच्छा जीवन व्यतीत किया होता है। जब उनका विवाह होता है वे तब भी वैसा ही अच्छा जीवन व्यतीत करना चाहते

हैं। वो सब पाने के लिए जो वे चाहते हैं, अक्सर कर्ज में डूब जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनके वैवाहिक जीवन में दिक्कतें आती हैं! इसका हल यही है कि अगर आपके पास धन नहीं है तो खर्च भी न करें। अगर आप घर के लिए कोई सामान खरीदना चाहते हैं लेकिन उसका भुगतान नहीं कर सकते तो ज़बर्दस्ती उस वस्तु को खरीदने की कोशिश न करें। एक बजट बनाएं कि हर सप्ताह आने वाले खर्च आप कैसे करेंगे। बजट बनाना एक अच्छा अनुभव हो सकता है। उन चीज़ों की भी सूची बना कर जिन पर आपको पैसा खर्च करना है, उन्हें खरीदने से पहले आप यह फैसला ले सकते हैं कि आपको इनमें से किस चीज़ की सचमुच आवश्यकता है।

धन खर्च करने के फैसले एक-दूसरे के सहयोग से लें

धन खर्च करने का फैसला दोनों को इकट्ठे मिलकर लेना चाहिए। विवाह के बाद ''मेरा पैसा'' और ''उसका पैसा'' जैसी कोई चीज़ नहीं होती। हर चीज़ मिलकर ली जाती है-कानूनी तौर पर भी और बाइबल के अनुसार भी-और किसी के पास भी यह अधिकार नहीं है कि वह परिवार के दूसरे सदस्यों की सलाह लिए बिना परिवार का पैसा खर्च करे। चाहे पति परिवार का मुखिया होता है लेकिन उसके पास भी यह अधिकार नहीं है कि वह अपनी पत्नी की सलाह लिए बिना धन खर्च करने का फैसला ले सकें!

कोई भी बड़ा खर्च करने का फैसला पति-पत्नी को मिलकर लेना चाहिए।[10] छोटे-छोटे खर्चों के लिए पति-पत्नी के लिए यह काफी है कि उन्हें यह पता हो कि बजट की किस वस्तु पर कितना खर्च किया जाना चाहिए।

इसके अलावा जब भी कोई फैसला लें, परमेश्वर को उसका भागीदार ज़रूर बनाएं। प्रार्थना में उससे अगुआई की मांग करें। आखिर यह सारा धन उसका ही तो है, जो आप खर्च कर रहे हैं।

सुनिश्चित करें कि खर्च करने के निर्णयों से आत्मिक मूल्यों की झलक मिलती

खर्च करने के निर्णयों से सांसारिक के बजाय आत्मिक मूल्यों की झलक मिलनी चाहिए। एक मसीही के रूप में आपका मुख्य लक्ष्य मसीह की सेवा करना है और आप इस बात को समझते हैं कि जो कुछ आपके पास है आप उसके भण्डारी हैं और उसे परमेश्वर की महिमा के लिए इस्तेमाल करने की ज़िम्मेदारी आप पर हैं। इस कारण खर्च करने का हर निर्णय सोच समझकर बड़ी सावधानी से लेंगे। अपने आप से पूछें, ''मेरा यह निर्णय परमेश्वर की महिमा के लिए है?'' इसका उत्तर हो सकता है कि आसान न हो, पर उत्तर ढूंढ़ना आवश्यक है।

धन के आपके इस्तेमाल का एक ढंग जिससे आत्मिक मूल्यों की झलक मिलनी चाहिए, यह है कि आप ''जोनसों के साथ रहने'' अर्थात अपने आस-पास के लोगों से बड़ी और बेहतर चीज़ें खरीदकर अपने रुतबे को बढ़ाने की कोशिश की संसार की प्रवृत्ति को नकारें। परमेश्वर की आशिषों के भंडारी होने के नाते आपको ''प्रभु का धन'' हर सम्भव बेहतरीन ढंग से खर्च करने की कोशिश करनी चाहिए।

ऐसी चीज़ों पर धन खर्च करें जो टिकाऊ हों

विवाह के समय आप संसार से कहते हैं, ''हम वयस्क हैं।'' वस्यक होने के कारण आपको

यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि आप अपना धन बच्चों की तरह खर्च न करें। छोटे बच्चे को धन मिलने पर जल्दी से वह बाहर जानकर खाने-पीने में उड़ा देता है। उसे भविष्य के लिए धन बचाने का कोई ध्यान नहीं है, बल्कि उसे तो केवल अभी का ध्यान है। बड़े होने के कारण आपको ऐसी बचकानी बातों को छोड़कर अधिक टिकाऊ ढंग अपने धन का निवेश करना चाहिए। कैसे?

(1) खरीदारी के समझदारी भरे निर्णय लें। बेहतरीन सौदे की तलाश करें यानी अपने धन का बेहतर से बेहतर इस्तेमाल करें। विचार करें कि जो कुछ आप खरीद रहे हैं वह कब तक चलेगा।

(2) अपने बुढ़ापे के लिए योजना बनाएं। अपने विवाह के आरम्भ से ही आपको और आपके पति या पत्नी को अपनी आय का एक भाग निरंतर बचाते रहना चाहिए ताकि बुढ़ापे में वह आपके काम आ सके।

(3) प्रभु के लिए उदारता से दें। कलीसिया के काम के लिए देकर आप ''स्वर्ग में धन इकट्ठा'' कर रहे हैं (देखें मत्ती 6:19क; KJV)। किसी ने कहा है, ''आप इसे साथ नहीं ले जा सकते, पर आप इसे अपने आगे भेज सकते हैं।'' जब आप प्रभु के काम को बढ़ाने के लिए देते हैं तो आप वास्तव में अनन्तकाल के लिए निवेश कर रहे हैं!

सारांश

जिम हॉकिन्स ने किसी दम्पत्ति के वित्तीय उद्देश्य के ढंग का एक सटीक निष्कर्ष दिया है:

> वैवाहिक सम्बन्ध के आर्थिक स्वास्थ्य और स्थिरता के लक्ष्य में पहले तो यह होना चाहिए कि, पैसे के खर्च करने का कोई गुप्त ढंग न हो। दूसरा हर दम्पत्ति के लिए एक बजट आवश्यक है, कि उन पर कर्ज है या नहीं, वे पैसे का प्रबन्धन स्व:अनुशासन से करते हैं या नहीं। तीसरा यह आवश्यक है कि दम्पत्ति खर्च करने में मोल भाव करना सीखें। और सबसे आवश्यक किसी दम्पत्ति के लिए जीवन में अपने मूल्यों और लक्ष्यों के द्वारा विचार करना समझदारी है ताकि वे उस धन से जो उन्होंने कमाया [है] उससे जो चाहते हैं उसे पाने में काम कर सकें।[12]

आप और आपकी पत्नी या पति अपने पैसे को खर्च करने के ढंग से यह दिखाते हैं कि आप क्या हैं और आपका विवाह कैसा है। परन्तु खर्च करने के आपके ढंग से भी महत्वपूर्ण यह है कि आप आर्थिक तंगियों से कैसे निपटते हैं। यदि आप एक-दूसरे के प्रति प्रेम और आदर के साथ और हर बात में परमेश्वर को महिमा देने की इच्छा से समस्याओं को सुलझाने के लिए मिलकर काम करने को तैयार हैं तो धन की कोई समस्या आपके विवाह को तोड़ नहीं पाएगी।

टिप्पणियां

[1]1 तीमुथियुस 6:10 के अनुसार हर प्रकार की बुराई की जड़ ''धन'' नहीं, बल्कि ''धन से प्रेम'' है। [2]एक स्रोत ने कहा कि ''[अमेरिका में] आधे विवाह तलाक के साथ समाप्त होते हैं, जिनमें जिनमें विवाह टूटने का सबसे बड़ा कारण 'धन की समस्याएं' बताया गया है।'' (http://www.marriagemissions.com/money-

problems-marriage-message-31/; इंटरनैट; 24 अक्तूबर 2008 को देखा गया). [3]बेशक कई बार मसीही लोग बिना अपने दोष के अपने जीने के लिए दूसरों की उदारता पर निर्भर होना पड़ता है [4]लूका 12:15 में KJV में ''लोभ'' के विरुद्ध चेतावनी है। NASB में ''लालच'' है। [5]''पर जो धनी होना चाहते हैं वे ऐसी परीक्षा और फंदे और बहुत सी व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डुबो देती हैं'' (1 तीमुथियुस 6:9)। [6]एक मसीह के भौतिक सम्पत्ति में जैसे उदाहरण के लिए घर, कार, या कपड़ों या दर्ज की जताने वाली ''तर्कसंगत'' राशि क्या है। यह परिस्थितियों के ऊपर निर्भर है। कोई किसी दूसरे को यह नहीं बता सकता है कि ''चीज़ों'' पर कितना खर्च किया जाए। मसीही व्यक्ति द्वारा खरीद के निर्णयों उसके और प्रभु के बीच हैं परमेश्वर के हर बालक को विवेकपूर्ण ढंग से विचार करना पड़ता है कि परमेश्वर के वचन के प्रकाश में धन कैसे खर्च किया जाए। [7]1 कुरिन्थियों 1:26 के अनुसार अधिकतर आरम्भिक मसीही, ''ज्ञानवान,'' ''सामर्थी,'' या ''कुलीन'' नहीं थे; परन्तु कुछ थे। [8]देखें भजन संहिता 24:1; हाग्गै 2:8; 1 इतिहास 29:11-14; याकूब 1:17 और प्रेरितों 17:25 भी देखें। परमेश्वर ''सबको जीवन और श्वास और सब कुछ देता है,'' [9]भण्डारीपन का नियम तोड़ों के दृष्टांत में समझाया गया है (मत्ती 25:14-30)। भण्डारी ''विश्वास योग्य पाया जाना'' आवश्यक है। (1 कुरिन्थियों 4:2.) [10]बच्चे होने के बाद, उन्हें भी ध्यान में रखना चाहिए और शायद बड़े निर्णयों पर उन से सलाह लेनी चाहिए।

[11]जवान लोग यह विचार कर सकते हैं कि शिक्षा पर किया जाने वाला तर्क भविष्य में समझ में किया गया निवेश है। [12] जिम हॉकिन्स, *टार्निशड रिंग्स* (शिपन्सबर्ग, पनामा: ट्रयर हाउस, 1993), 148.